डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए.पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

B.A. Part-I
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper-I

Date:- 17-02-2023

Page No.
Date

कबीरदास के पद (भक्ति) - भाग-1

जब लग नाता जग का,
तब लग भगति न होय,
नाता तोड़े हर भजे,
भगत कहावे सोये।

भावार्थ :-

कबीरदास कहते हैं कि सांसारिक वासनाओं में लिप्त रहने पर भगवान की भक्ति होना सम्भव नहीं है। आसक्ति भक्ति की विरोधी है। आसक्ति होती है सांसारिक पदार्थ की। भक्ति संसार की आसक्ति से नाता तोड़ने पर ही हो सकती है। सच्चा भक्त वही कहला सकता है जिसने संसार की आसक्ति रागविराग से नाता तोड़ लिया है और अपने चित्त को परमात्मा में टिका लिया है।

भक्ति भेष बहु अन्तरा,
जैसे धरनि आकाश।
भक्त लीन गुरु चरण में,
भेष जगत की आश॥

भावार्थ:-

भक्ति और वेश में इतना ही अन्तर है जितना अन्तर धरती और आकाश में है। भक्त सदैव गुरु की सेवा में मग्न रहता है उसे अन्य किसी ओर विचार करने का अवसर नहीं मिलता किन्तु जो वेशधारी है अर्थात भक्ति करने का आडम्बर करके सांसारिक सुखों की चाह में घूमता है वह दूसरों को तो धोखा देता ही है, स्वयं अपना जीवन भी व्यर्थ गँवाता है।